© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2017

चरकसंहिता में प्रयुक्त सोपसर्ग धात्वर्थों का विवेचन

Dr. Seema Devi, Department of Sanskrit, Govt. Gollege Bahadurgarh

आयुर्वेदीय चिकित्सा वाङ्मय में 'चरकसंहिता' विश्वकोष के समान चिकित्सा–विधियों का एक आकर ग्रन्थ है। आयुर्वेद की समस्त प्रतिष्ठा का श्रेय इस ग्रन्थ रत्न को है। अग्निवेशतन्त्र (वर्तमान काल में च. सं. के नाम से प्रसिद्ध) ने ही परिष्कृत एवं उपबृंहित होकर च. सं. का रूप ले लिया। सुश्रुतसंहिता आदि का नाम प्रतिसंस्कार के बाद भी नहीं बदला, किन्तु चरककृत प्रतिसंस्कार इस अर्थ में विशिष्ट है कि उसने अपना प्रभुत्व स्थापित कर मूल प्रणेता को ही तिरोहित कर दिया।

प्रस्तुत शोध–पत्र में च. सं. में प्रयुक्त सोपसर्ग धात्वार्थों का विवेचन किया गया है। संस्कृत में उपसर्गों का वही स्थान है, जो स्थान गणित में शून्य का है जिस प्रकार अकेले शून्य का अपना कोई महत्त्व नहीं होता, परन्तु किसी अन्य अंक के पीछे जुडकर उसका महत्त्व दस गुणा हो जाता है। उसी प्रकार उपसर्गों का अपना कोई अर्थ नहीं होता, परन्तु धातु के आगे प्रयुक्त होकर ये भिन्न–भिन्न अर्थों को द्योतित करते हैं 'आख्यातमुपगृह्यार्थ–विशेषमिमे तस्यैव सृजन्तीत्युपसर्गाः'[1]।

(1) अभि √अस् 614 गतिदीप्त्यादानेषु, भ्वा. उभ. से.। अभ्यसेत्[2]–अवनीन्द्र कुमार द्वारा सम्पादित 'पाणिनीय धात्वनुक्रम –कोश' (पा.धा.को.)[3] में अभि उपसर्गपूर्वक √अस् धातु का अर्थ– 'अभ्यास करना'– है, परन्तु च.सं. में इसका अर्थ–'उपयोग करना'–है।

(2) वि √अस् 108 क्षेपणे, दिवा. प. से.। व्यवस्यति[4]–युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा सम्पादित 'संस्कृत–धातु–कोषः' (सं.धा. को.[5]) में व पा.धा. को.[6] के अनुसार वि √अस् धातु–'विभाग करना, हिस्सा करना'–अर्थों को द्योतित करती है, किन्तु च. सं. में इसका अर्थ–'प्रयत्न करना'–है।

(3) प्रति √ईक्ष् 394 दर्शने, भ्वा. आ. से.। प्रतीक्षते[7]–सं. धा. को[8]. तथा पा. धा. को.[9] में प्रति उपसर्ग पूर्वक ईक्ष् धातु का अर्थ–प्रतीक्षा करना'–है, परन्तु च.सं. के वर्तमान प्रयोग में इसका अर्थ–'कहना'–है।

(4) वि √कस् 490 गतौ, भ्वा. प. से। विकसेत्[10]–वि उपसर्ग पूर्वक √कस् धातु का अर्थ सं. धा. को.[11] व पा. धा. को.[12] के अनुसार–'खिलना'–हैं, किन्तु यहाँ इस अर्थ का प्रयोग न करके–'मारना'–किया है।

(5) अनु √काङ्क्ष 45 काङ्क्षायाम्, भ्वा. प. से। अनुकाङ्क्षेत्[13]–पा. धा. को.[14] में प्रति + आ उपसर्गों के योग में √काङक्ष् धातु–'प्रतीक्षा करना'–अर्थ की द्योतक है, किन्तु वर्तमान प्रयोग में अनु उपसर्ग के साथ भी इसी अर्थ का द्योतन हुआ है।

(6) वि √क्षिप् 5 प्रेरणे, तुदा. उभ. अ.। विक्षिपते[15]–वि उपसर्ग पूर्वक √क्षिप् धातु सं.धा. को.[16] व पा.धा. को.[17] में–'फैलाना'–अर्थ की बोधक है, किन्तु च. सं. के अर्थानुसार धातु का अर्थ–'घुमाना'–है।

(7) अनु √गम् 700 गतौ, भ्वा. प. अ.। अनुगतम्[18]–सं. धा. को.[19] तथा पा. धा. को.[20] में आ √गम् धातु का अर्थ–'आना'–है, किन्तु च. सं. में अनु उपसर्ग के साथ भी यही अर्थ व्यवहृत है।

(8) अव √गाह् 420 विलोडने, भ्वा. आ. से.। अवगाहामहे[21]–अव उपसर्ग के योग में √गाह् धातु सं. धां. को.[22] तथा पा. धा. को.[23] में–'अवगाहन करना, स्नान करना' अर्थों को संकेतित करती है, किन्तु यहाँ प्रंसगानुसार अर्थ–'समझना'–है।